कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 09, (फरवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 39–41

गेहूं की खेती में खरपतवार प्रबन्धन

सुनील कुमार[1], डॉ. हिमांशु तिवारी[2], गजेला इंदिरा[3] एवं देवेश पाठक[4]

[1]शोध छात्र, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग
[2]गेस्ट फैकल्टी, सस्य विज्ञान विभाग, [3]सस्य विज्ञान विभाग
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश (उ.प्र.).
[4]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केंद्र कठौरा, अमेठी (उ०प्र०), भारत।

Email Id: sssp447a@gmail.com

परिचय

जैसा की आप लोग जानते है गेहूं भारत वर्ष में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण अनाज वाली फसलो में से एक है, जो धान के बाद भारत में उगाई जाने वाली दूसरी फसल है जो देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । विश्व में इसका उत्पादन लगभग 778 मिलियन मीट्रिक टन है, देश की अधिकांश जनसँख्या गेहूं की फसल पर निर्भर है। गेहूँ का लगभग 97 : क्षेत्र सिंचित है। गेहूँ का प्रयोग मनुष्य अपने जीवनयापन हेतु मुख्यत रोटी के रूप में प्रयोग करते हैं, जिसमे प्रोटीन प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। भारत में पंजाब, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश मुख्य फसल उत्पादक क्षेत्र हैं। गेहूँ की खेती के लिए समशीतोषण जलवायु की आवश्यकता होती है, इसकी खेती के लिए अनुकूल तापमान बुवाई के समय 20–25 डिग्री सेंटीग्रेट उपयुक्त माना जाता है, गेहूँ की खेती मुख्यत सिंचाई पर आधारित होती है गेहूँ की खेती के लिए दोमट भूमि सर्वोत्तम मानी जाती है । गेहूं की अच्छी पैदावार पाने हेतु फसल में खरपतवार का प्रबंधन बहुत जरुरी है, फसल में अधिक खरपतवार होने पर फसल की पैदावार में बहुत नुकसान होता है जब किसान फसल में खाद, पानी आदि देता है तो उसको खरपतवार ग्रहण कर लेते है जिससे फसल की बढवार कम होती है और उत्पादन में कमी होती है जिसमे किसानो की आय अधिक लगती है और मुनाफा कम होता है यदि हम सही समय पर खरपतवारो का नियंतरण नही करते है तो फसल उत्पादन में 30 से 60 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है।

गेहूं में होने वाले खरपतवार को मुख्यतया दो वर्गो में बिभाजित किया गया है

1. **सकरी पत्ती वाले खरपतवार–** इस प्रकार के घास की पत्तिया पतली व लम्बी होती है तथा इन पत्तियों के अन्दर समान्तर धारियां पायी जाती है, ये एक बीज पत्री पौधे होते है जैसे– मोथा ,कांश ,जंगली जई आदि।
2. **चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार–** इस प्रकार के घास की पत्तिया चौड़ी होती है इस प्रकार के पौधे मुख्तया दो बीजपत्री होते है जैसे– बथुआ, कासनी, जंगली पालक, हिरनखुरी, सत्यानाशी, कृष्णनील आदि।

खरपतवार नियंत्रण की विधियाँ–

फसल में खरपतवार को मुख्यतया दो विधियों द्वारा नियंत्रण किया जा सकता है।

1. शस्य विधियों द्वारा खरतवार प्रंबधन– गेहूं की फसल में उगने वाले

खरपतवार मुख्यतया मौसमी होते है जो की फसल के साथ ही जमते है तथा ये एक निश्चित तापमान पर उगते है कुछ खरपतवार तो बीज के साथ ही जमते है , इन खरपतवारो को निम्नलिखित शस्य क्रियायों के द्वारा कम किया जा सकता है।

- अच्छी खेत की तैयारी करके
- खेत में समुचित नमी के द्वारा
- अच्छी क्वालिटी के बीज का चयन करके
- बीज उपचार करके
- उचित बीज की मात्रा द्वारा
- उचित बिधि द्वारा बुवाई करके
- उचित गहराई में बीज कु बुवाई करके
- गेहू की ऐसी किस्म का चयन करना चाहिए जिसकी बढवार जल्दी होती हो, जो जल्द ही जमीन को ढक ले जिससे प्रारंभिक अवस्था में उगने वाले खरपतवार सही से न जमने पाए और फसल की पैदावार अच्छी हो सके ।
- फसल चक्र अपनाना चाहिये,जिससे बिभिन्न प्रकार की फसलो को फसल चक्र मे शामिल करने से खरपतवारों का जीवन चक्र कम हो जाता है जिससे खरपतवारों की बढ़वार कम होती है साथ ही फसल चक्र अपनाने से फसल की पैदावार अच्छी होती है उदाहरणतः धान–गेहूं फसल चक्र मे बरसीम, मटर, सब्जियां, सूरजमुखी जैसी फसलों को गेहूं के बदले में उगाकर खरपतवारनाशी की प्रतिरोधी क्षमता के विकसित होने से बचा जा सकता है।
- रासायनिक तत्वों के पोषण व पानी का विभाजन खरपतवार व फसल में होता है इसलिए खाद का प्रयोग खरपतवार निंयत्रण के बाद करना चाहिए जिससे इनका लाभ गेहूं को मिले न की खरपतवरों को।
- जीरों टीलेज से गेहूं की बिजाई करने से गेहूं का जमाव जल्दी होता है जीरों टीलेज के लिए फसल चक्र प्रमुख है क्योंकि यह स्थायी मल्च कवर के लिए समुचित बायोमास स्तर को बढाता है यह खरपतवार नियंत्रण,कीटो और रोगों के साथ साथ मिट्टी की भौतिक स्तिथि में भी सुधार करता है ।

2. रासायनिक दवावो द्वारा खरपतवार प्रंबधन– गेहूं की फसल में उगने वाले खरपतवार को रासायनिक दवाओ द्वारा सही मात्रा में प्रयोग करने से किया जा सकता है रसायनों का प्रयोग बहुत ही सावधानी से करना चाहिए इसकी अधिक मात्रा होने पर फसल पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है ।

गेहूं में खरपतवारनाशी का प्रयोग तीन क्रांतिक अवस्थाओं में किया जा सकता है।

1. प्री सोइंग (बुवाई से पूर्व)
2. प्री एमरजेन्स (खरपतवार जमने से पहले)
3. पोस्ट एमरजेन्स (खरपतवार जब 2–4 पत्ती अवस्था में हो)

1. प्री सोइंग (बुवाई से पूर्व)–

खेतों में खरपतवारनाशी का प्रयोग किसी भी फसल की बुवाई से पूर्व करना चाहिये, ऐसा करने से बोई गई के जमने से पहले खरपतवार खत्म हो जाते है और फसल में सफलता पूर्वक खरपतवार नियंत्रण करने में सहायता मिलती है ।

2. प्री एमरजेन्स (खरपतवार जमने से पहले)–

इस प्रकार के खरपतवारनाशियों का प्रयोग फसल की बुवाई के बाद परन्तु फसल के जमने से पहले की जाती है खेत में यह स्तिथि फसल और खरपतवार के जमने से पूर्व होती है। गेहूं की बुवाई के तुरन्त बाद पैण्डीमैथलीन 8–8.5

मिलीध्लीटर को 150–200 लीटर पानी में मिला कर छिडकाव करना चाहिए ये घोल एक एकर फसल के लिए प्रयाप्त होता है। पैण्डीमैथलीन चौड़ी पत्ती तथा घास कुल के खरपतवारो को भी मार देती है ।

3. पोस्ट एमरजेन्स (खरपतवार जब 2–4 पत्ती अवस्था में हो)–

इस प्रकार के खरपतवारनाशियों का प्रयोग फसल और खरपतवार के जमने के बाद किया जाता है इस प्रकार के खरपतवारनाशियों का प्रयोग फसल में पहली सिंचाई के (21–25 दिन) बाद जब खेतों में पैर टिकने लगे और खरपतवार 2–4 पत्ती अवस्था में हो तभी किया जाता है । वीडमार (2,4–डी नमक) को 4 ग्रामध लीटर को 150–200 लीटर पानी में मिला कर छिडकाव करने से खरपतवारो का उन्मूलन किया जा सकता है ।

- केवल चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार मारने के लिए 2,4–डी नमक 80 प्रतिशत 250 मिलीलीटर दवा एक एकड़ एवं 625 मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर को 400 से 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करने से तीन से चार दिन में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार मर जाते हैं ।
- केवल संकरी पत्ती वाले गेहूंसा, गेहूं का मामा, गुल्ली डंडा एंव जंगली जई को मारने के लिए केवल स्ल्फोसफल्फ्यूरान या क्लोनिडाफाप प्रोपेरजिल 15 प्रतिशत डब्ल्यूपी 400 ग्राम प्रति एकड़ को पानी में घोलकर छिड़काव करने से मार जाते है

गेहूं में होने वाले खरपतवारनाशियों का प्रयोग–

खरपतवारनाशी का नाम	ग्राम/हेक्टेयर	प्रयोग, दिन बाद	नियंत्रित खरपतवार
2 ,4- डी	500-800	बुआई के 30-35	चौड़ी पत्ती
मेटस्लफयूरोन मिथाइल	40 ग्राम	बुआई के 25-35	चौड़ी पत्ती
पैन्डीमेथिलीन	3 लीटर	बुआई के तुरन्त बाद	चौड़ी पत्ती व घास जाति
सल्फोसल्फयूरोन	25 ग्राम	बुआई के 35-40	चौड़ी पत्ती व घास जाति
कारफेट्राजोन	50 ग्राम	बुआई के 35-40	चौड़ी पत्ती
क्लोडीनोपोप	60 ग्राम	बुआई के 35-40	घास कुल
फिनोक्सोप्रोम	100 ग्राम	बुआई के 25-30	घास कुल
पिनक्साडैन	60 ग्राम	बुआई के 30-35	सकरी पत्ती

प्रयोग करने की विधि –

खरपतवारनाशियो का प्रयोग 500 –600 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिए ।

खरपतवारनाशी प्रयोग करते समय ध्यान रखने वाली बातें:

- फसलों में उपस्थित खरपतवारों के प्रकार और उनकी अवस्था के अनुसार खरपतवारनाशियो का चयन करना चाहिए।
- खरपतवारनाशी को हमेशा प्रमाणित दुकान से ही खरीदना चाहिए।
- खरपतवारनाशी का प्रयोग सही मात्रा (न जादा, न कम) में करना चाहिए।
- खरपतवारनाशी का प्रयोग करने से पहले पंप (स्प्रयेर) को अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए।
- खरपतवारनाशी का प्रयोग हवा के बिपरीत दिशा में नही करना चाहिए।
- खरपतवारनाशी को बच्चों के पहुच से दूर रखना चाहिए।
- दवा के प्रयोग के बाद मशीन को अच्छी तरह साफ कर देना चाहिए।